

शारीरस्थान

1. कतिधापुरुषीय शारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-156

धातुभेद से पुरुष के भेद (Purusha - as per dhatus)

- खाद्यश्चेतनाषष्ठा धातवः पुरुषः स्मृतः ।
चेतनाधातुरप्येकः स्मृतः पुरुषसंज्ञकः ॥
- पुनश्च धातुभेदेन चतुर्विंशतिकः स्मृतः ।
मनो दशेन्द्रियाण्यर्थाः प्रकृतिश्चाष्टधातुकी ॥ च.शा. 1.16-17

- षड् धातुज पुरुष- पञ्चमहाभूत एवं आत्मा
- एक धातुज पुरुष- चेतना धातु
- चतुर्विंशति तत्त्वात्मक पुरुष- अव्यक्त + महान् + अहंकार + एकादश इन्द्रियां + पञ्चतन्मात्रा + महाभूत

मन के लक्षण (Features of manas)

- लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव च ।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

सति ह्यात्मेन्द्रियार्थानां सनिकर्षे न चर्तते ॥
वैवृत्याम्नसो ज्ञानं सानिध्यात्तच्च चर्तते । च.शा. 1.18-19

एक साथ (युगपत्) ज्ञान का अभाव (न होना) और भाव (होना) मन का लक्षण है। आत्मा, इन्द्रिय और अर्थों का संयोग होने पर भी मन का सानिध्य (संयोग) न हो तो ज्ञान नहीं होता।

मन के गुण (Qualities of manas)

- अणुत्वमध चैकत्वं द्वौ गुणी मनसः स्मृतौ ॥ च.शा. 1.19
 - अणुत्व
 - एकत्व

मन के विषय (Subjects of manas)

- चिन्त्यं विचार्यमूहां च ध्येयं संकल्प्यमेव च ।
यत्किञ्चित्मनसो ज्ञेयं तत् सर्वं ह्यार्थसंज्ञकम् ॥ च.शा. 1.20
 - चिन्त्य (जो कुछ सोचा जाय)
 - विचार्य (जो कुछ गुण या दोष की दृष्टि से विचारा जाय)
 - ज्ञेय (जो कुछ युक्त द्वारा तर्कणा की जाय)
 - ध्येय (जिसका ध्यान किया जाय)
 - संकल्प्य (जो कुछ कर्तव्याकर्तव्य को कल्पना का निश्चय किया जाय) तथा
 - अन्य जो भी मन से ज्ञेय हैं

मन के कर्म (Functions of manas)

- इन्द्रियभिग्रहः कर्म मनसः स्वस्य निग्रहः । च.शा. 1.21
 - ऊहो विचारश्च, ततः परं बुद्धिः प्रवर्तते ॥
 - इन्द्रियों को नियन्त्रित करना अर्थात् हानिकारक विषयों से हटाना (अभिग्रह)

- धृति की सहायता से स्वयं अपना निग्रह करना (नियन्त्रण)
 - इन्द्रियों के द्वारा विषयों का प्रत्यक्षीकरण (ऊह)
 - विकल्प का विचार करना अर्थात् यह वस्तु हितकर और गुणयुक्त होने से ग्राह्य है तथा अहितकर एवं दोषयुक्त होने से त्याज्य है।

पञ्च कर्मेन्द्रिय (Five karmendriyas) (च.शा. 1.25-26)

इन्द्रिय	कर्म
हस्त	ग्रहण एवं धारण
पाद	गमनकर्म
गुद	विसर्ग (मल का)
उपस्थ	विसर्ग (मूत्र तथा शुक का)
वागिन्द्रिय	बाणी

महाभूत एवं उनके गुण (Mahabhutas and their qualities)

- महाभूतानि खं वायुरग्निरापः क्षितिस्तथा ।
शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च तदगुणाः ॥ च.शा. 1.27

2020-7-

महाभूतों के लक्षण (Features of mahabhutas)

- खरद्रवचलोष्टात्वं भूजलानिलतेजसाम्।
आकाशस्याप्रतीघातो दृष्टं लिंगं यथाक्रमम्॥ च.शा. 1.29

महाभूत	गुण	लक्षण
आकाश	शब्द	अप्रतीघात
वायु	स्पर्श	चलत्वं
अग्नि	रूप	उष्णत्वं
जल	रस	द्रवत्वं
पृथिवी	गन्ध	खरत्वं

राशि पुरुष (Rashi purusha)

- बुद्धीन्द्रियमनोर्थानां विद्याद्योगधरं परम्।
चतुर्विशतिको होष राशिः पुरुषसंज्ञकः॥ च.शा. 1.35
प्रकृति (अव्यक्त + महान् + अहंकार + पञ्चतन्मात्रा) + विकार (मन + 5 ज्ञानेन्द्रिय + 5 कर्मेन्द्रिय + 5 महाभूत)

प्रकृति (Prakrti) (8)

- खादीनि बुद्धिरव्यक्तमहंकारस्तथाऽष्टमः।
भूतप्रकृतिरूपद्वया
अव्यक्त + बुद्धि + अहंकार + पञ्चतन्मात्रा

च.शा. 1.63

॥

कतिधापुरुषीय शारीराध्याय

विकार (Vikara) (16)

- विकाराश्चैव घोडश ॥
बुद्धीन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्च कर्मेन्द्रियाणि च ।
सप्तनस्काश्च पञ्चार्थां विकारा इति संज्ञिताः॥ च.शा. 1.63-64
मन + 5 ज्ञानेन्द्रिय + 5 कर्मेन्द्रिय + 5 महाभूत

सृष्टि उत्पत्ति क्रम (Origin of shrsti)

- जायते बुद्धिरव्यक्ताद्बुद्ध्याऽहमिति मन्यते ।
परं खादीन्यहंकारादुत्पद्यन्ते यथाक्रमम्॥
ततः संपूर्णसर्वांगो जातोऽभ्युदित उच्यते । च.शा. 1.66-67
अव्यक्त → बुद्धि तत्त्व → अहंकार → आकाशादि सूक्ष्म महाभूत
→ सम्पूर्ण सर्वांग पुरुष (अभ्युदित)

पुरुष के लक्षण (Features of a purusha)

- प्राणापानौ निमेषाद्या जीवनं मनसो गतिः ।
इन्द्रियान्तरसंचारः प्रेरणं धारणं च यत् ॥
देशान्तरगतिः स्वने पञ्चत्वग्रहणं तथा ।
दृष्टस्य दक्षिणेनाक्षणा सव्वेनावगमस्तथा ॥
इच्छा द्रेषः सुखं दुःखं प्रयत्नश्चेतना धृतिः ।
बुद्धिः स्मृतिरहंकारो लिङ्गानि परमात्मनः ॥

- यस्मात् समुपलभ्यन्ते लिङ्गान्येतानि जीवतः ।
 न मृतस्यात्मलिंगानि तस्मादाहुर्महर्षयः ॥ च.शा. 1.70-73
- प्राण एवं अपान की गतिशीलता - निमेषादि - जीवन
 - मन की गति - इन्द्रियान्तर - प्रेरण
सञ्चार
 - धारण - स्वप्न में देशान्तर गति
 - पञ्चत्व ग्रहण - दक्षिण नेत्र से दृष्ट वस्तु को वाम नेत्र से स्वीकार करना
 - इच्छा - द्वेष - सुख
 - दुःख - प्रयत्न - चेतना
 - धृति - बुद्धि - स्मृति
 - अहंकार

नैष्ठिकी चिकित्सा (Naishthiki chikitsa)

- दुःखों से सदैव के लिए निवृत्ति को 'निष्ठा' कहते हैं। इसी प्रकार की उपधा से रहित चिकित्सा 'नैष्ठिकी चिकित्सा' है।

उपधा (Upadha)

- उपधा हि परो हेतुर्दुःखदुःखाश्रयप्रदः ।
 त्यागः सर्वोपद्यानां च सर्वदुःखव्यपोहकः ॥ च.शा. 1.95

उपथा ही दुःख और दुःख के आश्रय स्वरूप का कारण है। सभी प्रकार की उपधाओं का त्याग ही सभी दुःखों का विनाशक है।

दुःख का हेतु (Cause for duhkha)

- धीधृतिस्मृतिविभ्रंशः संप्राप्तिः कालकर्मणाम् । च.शा. 1.98
 असात्म्यार्थागमश्चेति ज्ञातव्या दुःखहेतवः ॥

1. धी, धृति एवं स्मृति का विभ्रंश
2. काल एवं कर्म की सम्प्राप्ति
3. असात्म्यार्थ का संयोग

प्रज्ञापराध की व्याख्या (Definition of prajnaparadha)

- धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत् कुरुतेऽशुभम् । च.शा. 1.102
 प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोषप्रकोपणम् ॥
 धी, धृति तथा स्मृति से रहित मनुष्य जो भी अशुभ कर्म करता है उससे वातादि दोष प्रकृपित हो जाते हैं। इसको प्रज्ञापराध कहते हैं।

वेदना का अधिष्ठान (Sites of vedana)

1. मन
2. देह
3. इन्द्रिय

वेदना निवृत्ति का साधन (Modes of vedana - nivrtti)

1. योग
2. मोक्ष

योग की व्याख्या (Definition of yoga)

- आत्मेन्द्रियमनोर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते ।

सुखदुःखमनारभादात्मस्ये पनसि स्थिरे ॥

निवर्तते तदुभयं वशित्वं चोपजायते ।

सशरीरस्य योगज्ञास्तं योगमृथ्यो विदुः ॥ च.शा. 1.138-139

आत्मा का मन से, मन का इन्द्रियों से और इन्द्रियों का अपने-अपने विषयों से जब संयोग होता है तब सुख तथा दुःख की प्रवृत्ति होती है। इसके विपरीत जब आत्मा में मन स्थिर भाव से रहता है तो सुख-दुःख की प्रतीति नहीं हो पाती है। अतः उन दोनों की निवृत्ति हो जाती है और तब वह शरीरधारी पुरुष वशी हो जाता है। योग को जाननेवाले इस स्थिति को 'योग' कहते हैं।

यीगिक सिद्धियां (Siddhis of yoga) - 8

- | | | |
|-----------|--------------------|---------------------------|
| 1. आवेश | 2. चेतसो ज्ञान | 3. अर्थानां छन्दतः क्रिया |
| 4. दृष्टि | 5. श्रोत्र | 6. सृति |
| 7. कान्ति | 8. स्वेच्छा अदर्शन | |

मोक्ष की व्याख्या (Definition of moksha)

- पोक्षो रजस्तमोऽभावात् बलवत्कर्मसंक्षयात् ।

वियोगः सर्वसंयोगैरपुनर्भव उच्यते ॥

च.शा. 1.142

कतिधापुरुषीय शारीराध्याय

रजो गुण तथा तमो गुण के अभाव हो जाने से तथा बलपूर्वक (प्रायश्चित्त द्वारा) कर्म के सम्पूर्ण हो जाने से जो विरकालिन कर्मों के बन्धनों से वियोग होता है उसे ही मोक्ष कहते हैं।

सृति के आठ कारण (Eight causes for smrti)

- | | |
|----------------|-----------------------|
| 1. निमित्त | 2. रूपग्रहण |
| 3. सादृश्य | 4. सादृश्य का विपर्यय |
| 5. सत्वानुबन्ध | 6. अध्यास |
| 7. ज्ञानयोग | 8. पुनः श्रवण |

• • •

2020-7-13 20:5

अतुल्यगोत्रीय शारीराध्याय

2. अतुल्यगोत्रीय शारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-48

शुक्र की व्याख्या एवं स्वरूप

(Definition and features of shukra)

- शुक्रं तदस्य प्रवदन्ति धीरा यद्दीयते गर्भसमुद्भवाय।
वाचग्निभूष्यबुणपादवज्ञत् षड्भ्यो रसेभ्यः प्रभवश्च तस्य॥

च.शा. 2.4

गर्भोत्पत्ति के लिए स्त्री की योनि में पुरुष द्वारा जो वस्तु आधान की जाती है वह शुक्र है। यह शुक्र वायु, अग्नि, भूमि और जल के ब्रेष्ट गुणों से युक्त होता है तथा मधुरादि षड्सों से इसकी उत्पत्ति होती है।

गर्भ लिंग निर्धारण का सिद्धान्त

(Establishment of sex of garbha)

- रक्तेन कन्यामधिकेन पुत्रं शुक्रेण तेन द्विविधीकृतेन। च.शा. 2.12

- आर्तव का आधिक्य - कन्या
- शुक्र का आधिक्य - पुत्र

बहुपत्यता का कारण (Cause for multiple progenies)

- भिन्नति यावद्बहुधा प्रपन्नः शुक्रार्तवं वायुरतिप्रवृद्धः।
तावन्त्यपत्यानि यथाविभागं कर्मात्मकान्यस्ववशात् प्रसूते॥

च.शा. 2.14

षाण्ड्य के भेद (Types of sandhya)- 8

- | | | |
|-----------------|----------------|----------------|
| 1. द्विरेता | 2. पवनेन्द्रिय | 3. संस्कारवाही |
| 4. नरपण्ड | 5. नारीपण्ड | 6. वक्री |
| 7. ईर्ष्याभिरति | 8. वातिकपण्ड | |

सद्योग्रहीत गर्भा के लक्षण

(Features of sadyogrhitā garbhā)

- निष्ठीविका गौरवमंगसादस्तन्द्राप्रहर्षो हृदये व्यथा च।
तृप्तिश्च बीजग्रहणं च योन्यां गर्भस्य सद्योऽनुगतस्य लिंगम्॥

च.शा. 2.23

- | | | |
|--------------|-------------------------|-----------|
| - निष्ठीवन | - गौरव | - अंगसाद |
| - हृदय व्यथा | - तन्द्रा | - प्रहर्ष |
| - तृप्ति | - योनि में बीज का ग्रहण | |

नीरोग कौन रहता है? (Who remains healthy?)

- नरो हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः।
दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः॥
मतिवर्चः कर्म सुखानुबन्धं सत्त्वं विधेयं विशदा च बुद्धिः।
ज्ञानं तपस्तत्परता च योगे यस्यास्ति तं नानुपत्तन्ति रोगाः॥

च.शा. 2.46-47

- | | |
|------------------------------|-------------------|
| - हित एवं अहित आहार सेवी | - समीक्ष्यकारी |
| - विषयों में असक्त | - दाता |
| - सम | - सत्यपर |
| - क्षमावान् | - आप्तोपसेवी |
| - सुखद मति | - सुखद कर्म |
| - सुखद अनुबन्ध | - सत्त्व |
| - विधेय | - विशद बुद्धिवाला |
| - ज्ञान तप एवं योग में तत्पर | |

अध्याय में पूछे गये प्रश्नों की संख्या

(Number of questions asked in the chapter)

- चक्रपाणि मतेन- 36
- गंगाधर राय मतेन- 26

• • •

3. खुड्डिकागर्भवक्रान्ति शारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-27

गर्भोत्पादक भाव

(Factors responsible for garbhotpadana)

- | | |
|-------------------|---------------------|
| 1. मातृज भाव (20) | 2. पितृज भाव (10) |
| 3. आत्मज भाव (22) | 4. सात्म्यज भाव (8) |
| 5. रसज भाव (6) | 6. सत्त्वज भाव (18) |

मन (Manas)

व्याख्या (Definition)

- यदिन्द्रियाणामभिग्राहकं च 'मन' इत्यभिधीयते। च.शा. 3.13
जो इन्द्रियों का अभिग्राहक है वह मन है।

भेद (Types)

- 1. शुद्ध

2020-7-13

2. राजस

3. तामस

भूतों की योनि (Yoni of bhutas) -4

1. जरायुज 2. अण्डज 3. स्वेदज 4. औदिभद्

• • •

4. महतीगर्भावक्रान्तिशारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-45

गर्भ की व्याख्या (Definition of garbha)

• शुक्रशोणितजीवसंयोगे तु खलु कृक्षिगते गर्भसंज्ञा भवति।

च.शा. 4.5

• गर्भस्तु खल्वन्तरिक्षवाच्चग्नितोय भूमिविकारश्चेतना-
धिष्ठानभूतः।

च.शा. 4.6

मासानुमासिक गर्भ के लक्षण

(Monthly growth features of garbha)

प्रथम मास (First month)

• स सर्वगुणवान् गर्भत्वमापनः प्रथमे मासि संमूच्छितः
सर्वधातुकलुषीकृतः खेटभूतो भवत्यव्यक्तविग्रहः
सदसदभूतांगावयवः॥

च.शा. 4.9

सभी धातुओं के स्वरूप को कलुषित कर कफरूप होकर अव्यक्त विग्रह (शरीर) वाला और सत्-असत् अंगों वाला।

द्वितीय मास (Second month)

- द्वितीये मासि घनः संपद्यते यिणः पेश्यर्बुदं चा।
तत्र घनः पुरुषः, पेशी स्त्री, अर्बुदं नपुंसकम्॥
- च.शा. 4.10

गर्भ का स्वरूप	गर्भ का लिंग
घन	पुरुष
पेशी	स्त्री
अर्बुद	नपुंसक

तृतीय मास (Third month)

- तृतीये मासि सर्वेन्द्रियाणि सर्वागावयवाश्च योगपद्येनाभिनिवर्तन्ते॥
- च.शा. 4.11

सभी इन्द्रियों और सभी अंग के अवयवों का एक साथ उत्पन्न होना।

दौहदावस्था के लक्षण (Signs of stage of dauhrda)

- | | | |
|--|-----------------|---------------------------|
| - आर्तवादर्शन | - मुख संस्वरण | - अनन्नाभिलाषा |
| - छर्दि | - अरोचक | - अम्ल कामता |
| - कभी उच्च और कभी सामान्य भावों के प्रति श्रद्धा | | |
| - गुरु गात्रता | - चक्षु म्लानता | - स्तन में स्तन्योत्पत्ति |

- ओष्ठ और स्तनमण्डल की कृष्णता
- रोमराजी का उद्गम
- पाद शोथ
- योनि का चाटालत्व

चतुर्थ मास (Fourth month)

- चतुर्थे मासि स्थिरत्वमापद्यते गर्भः, तस्मात्तदा गर्भिणी गुरुगात्रत्वमधिकमापद्यते विशेषेण ॥
- च.शा. 4.20
- गर्भ स्थिरता को प्राप्त करता है तथा गर्भिणी को गुरु गात्रता का अनुभव होता है।

पञ्चम मास (Fifth month)

- पञ्चमे मासि गर्भस्य मांसशोणितोपचयो भवत्यधिकमन्येभ्यो मासेभ्यः, तस्मात्तदा गर्भिणी काश्यमापद्यते विशेषेण ॥
- च.शा. 4.21

गर्भ के मांस और शोणित की अधिक वृद्धि होती है। तथा गर्भिणी विशेष रूप से कृश हो जाती है।

षष्ठ मास (Sixth month)

- षष्ठे मासि गर्भस्य बलवर्णोपचयो भवत्यधिकमन्येभ्यो मासेभ्यः, तस्मात्तदा गर्भिणी बलवर्णहनिमापद्यते विशेषेण ॥
- च.शा. 4.22
- गर्भ के बल, वर्ण एवं उपचय की विशेष वृद्धि होती है। तथा गर्भिणी के बल और वर्ण की विशेष हानि होती है।

सप्तम मास (Seventh month)

- सप्तमे मासि गर्भः सर्वे भावैराप्याद्यते, तस्मात्तदा गर्भिणी सर्वाकारैः क्लान्ततमा भवति ॥ च.शा. 4.23
गर्भ सभी भावों से परिपूर्ण होता है। और गर्भिणी सभी आकार एवं प्रकार से क्लान्ततम हो जाती है।

अष्टम मास (Eighth month)

- अष्टमे मासि गर्भश्च मातृतो गर्भतश्च माता रसहरिणीभिः संवाहिनीभिर्मुहुर्मुहुरोजः परस्परत आददाते गर्भस्यासंपूर्णत्वात्। तस्मात्तदा गर्भिणी मुहुर्मुहुर्मुदा युक्ता भवति मुहुर्मुहुश्च म्लाना, तथा गर्भः; तस्मात्तदा गर्भस्य जन्म व्यापत्तिमद्भवत्यो-जसोऽनवस्थितत्वात्। च.शा. 4.24

ओज की अस्थिरता के कारण गर्भ का जीवन सन्देह युक्त होता है। ओज की गति माता से गर्भ के शरीर में और गर्भ के शरीर से माता के शरीर में स्थानान्तरित होता रहता है।

सामान्य प्रसव काल

(Normal schedule for prasava)

- नवम से दशम मास पर्यन्त

गर्भ के महाभूतानुसार भाव

(Various panchabhautika bhavas of garbha)

महाभूत	महाभूतानुसार भाव
आकाश महाभूत	तत्रास्याकाशात्मकं शब्दः श्रोत्रं लाघवं सौक्ष्म्यं विवेकश्च । च.शा. 4.12
वायु महाभूत	वाय्वात्मकं स्पर्शः स्पर्शनं रौक्ष्यं प्रेरणं धातुव्यूहनं चेष्टाश्च शारीर्यः । च.शा. 4.12
अग्नि महाभूत	अग्न्यात्मकं रूपं दर्शनं प्रकाशः पक्तिरौच्यं च । च.शा. 4.12
जल महाभूत	अबात्मकं रसो रसनं शैत्यं मार्दवं स्नेहः क्लेदश्च । च.शा. 4.12
पृथिवी महाभूत	पृथिव्यात्मकं गन्धो ग्राणं गौरवं स्थैर्यं मूर्तिश्चेति । च.शा. 4.12

गर्भ वृद्धि का कारण

(Factors governing growth of garbha)

- गर्भकर भावों का सम्पूर्ण होना
- आहार सौष्ठव
- उपस्नेह
- उपस्वेद

- काल परिणाम
- स्वभावसंसिद्ध

**गर्भ की आंशिक विकृतियाँ
(Partial deformities of garbha)**

आर्तवजन्य	शुक्रजन्य
1. वन्ध्या	1. वन्ध्य
2. पूतिप्रजा	2. पूतिप्रज
3. वार्ता	3. तृणपुत्रिक

सत्त्व (Sattva)

1. शुद्ध सत्त्व
2. राजस सत्त्व
3. तामस सत्त्व

**सात सात्त्विक सत्त्वों के लक्षण
(Features of seven sattvika sattvas)**

1. ब्राह्म सत्त्व (Brahma Sattva)

- शुचिं सत्त्वाभिसन्धं जितात्मानं संविभागिनं ज्ञानविज्ञानवचनं प्रतिवचनसंपन्नं स्मृतिमन्तं कामक्रोधलोभमानमोहर्व्याहर्पां मर्यापेतं समं सर्वभूतेषु ब्राह्मं विद्यात्॥ च.शा. 4.37 (1)

महतीगर्भवक्रान्तिशारीराध्याय

2. आर्ष सत्त्व (Arsha Sattva)

- इज्याध्ययनव्रतहोमब्रह्मचर्यपरमतिथिव्रतमुपशान्तमदमानराग-द्वेषमोहलोभरोषं प्रतिभावचनविज्ञानोपधारणशक्तिसंपन्नमार्षं विद्यात्॥

च.शा. 4.37(2)

3. माहेन्द्र सत्त्व (Mahendra Sattva)

- ऐश्वर्यवन्तमादेयवाक्यं यज्वानं शूरमोजस्विनं तेजसोपेत-मक्लिष्टकर्माणं दीर्घदर्शिनं धर्मार्थकामाभिरतमेन्द्रं विद्यात्॥

च.शा. 4.37(3)

4. याम्य सत्त्व (Yamya Sattva)

- लेखास्थवृत्तं प्राप्तकारिणमसंप्रहार्यमुत्थानवत्तं स्मृतिमन्त-मैश्वर्यलम्भिनं व्यपगतरागेष्वद्वेषमोहं याम्यं विद्यात्॥

च.शा. 4.37(4)

5. वारुण सत्त्व (Varuna Sattva)

- शूरं धीरं शुचिमशुचिद्वेषिणं यज्वानमभोविहाररति-मक्लिष्टकर्माणं स्थानकोपप्रसादं वारुणं विद्यात्॥

च.शा. 4.37(5)

6. कौबेर सत्त्व (Kaubera Sattva)

- स्थानमानोपभोगपरिवारसंपन्नं धर्मार्थकामनित्यं शुचिं सुखविहारं व्यक्तकोपप्रसादं कौबेरं विद्यात्॥ च.शा. 4.37(6)

2020-7-13 20:54

चरक संहिता पूर्वाधि

7. गन्धर्व सत्त्व (Gandharva Sattva)

- प्रियनृत्यगीतवादित्रोल्लापकश्लोकाख्यायिकेतिहासपुराणेषु
कुशलं गन्धमाल्यानुलेपनवसनस्त्रीविहारकामनित्यमनसूयकं
गन्धर्वं विद्यात्॥
- च.शा. 4.37(7)

छह राजस सत्त्वों के लक्षण (Features of six rajasa sattva)

1. आसुर सत्त्व (Asura Sattva)

- शूरं चण्डमसूयकमैश्वर्यवन्तपौषधिकं रौद्रमननुक्रोश-
मात्मपूजकमासुरं विद्यात्॥
- च.शा. 4.38(1)

2. राक्षस सत्त्व (Rakshasa Sattva)

- अमर्थिणमनुबन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्र-
रुचिमार्मिषप्रियतमं स्वप्नायासबहुलपीर्यु राक्षसं विद्यात्॥
- च.शा. 4.38(2)

3. पैशाच सत्त्व (Paishacha Sattva)

- महाशनं स्तैर्णं स्त्रीरहस्कामपशुर्चिं शुचिद्वेषिणं भीरं भीषयितारं
विकृतविहाराहारशीलं पैशाचं विद्यात्॥
- च.शा. 4.38(3)

4. सर्प सत्त्व (Sarpa Sattva)

- कुर्वन्नरूपकुर्वभीरं तीक्ष्णायासबहुलं संत्रस्तगोचर-
माहारविहारपरं सार्पं विद्यात्॥
- च.शा. 4.38(4)

महतीगर्भवकान्तिशरीराध्याय

5. प्रैत सत्त्व (Praita Sattva)

- आहारकाममतिदुःखशीलाचारोपचारमसूयकमसंविभागि-
नमतिलोलुपमकर्मशीलं प्रैतं विद्यात्॥
- च.शा. 4.38(5)

6. शाकुन सत्त्व (Shakuna Sattva)

- अनुपक्तकाममज्माहारविहारपरमनवस्थितमर्घणमसंचयं
शाकुनं विद्यात्॥
- च.शा. 4.38(6)

तीन तामस सत्त्वों के लक्षण
(Features of three tamasa sattvas)

1. पाशव सत्त्व (Pashava Sattva)

- निराकरिष्युमेधसं जुगुस्तिताचाराहारं मैथुनपरं स्वप्नशीलं
पाशवं विद्यात्॥
- च.शा. 4.39(1)

2. मात्स्य सत्त्व (Matsya Sattva)

- भीरुपवृद्धमाहारलुब्धपनवस्थितमनुपक्तकामक्रोधं सरणशीलं
तोयकामं मात्स्यं विद्यात्॥
- च.शा. 4.39(2)

3. वानस्पत्य सत्त्व (Vanaspasya Sattva)

- अलसं केवलमधिनिविष्टमाहारं सर्ववृद्धयंगहीनं वानस्पत्यं
विद्यात्॥
- च.शा. 4.39(3)

• • •

5. पुरुषविचयशारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-26

लोक एवं पुरुष में साम्य

(Similarity between loka and purusha subjects)

- ‘पुरुषोऽयं लोकसमितः’ इत्युवाच भगवान् पुनर्वसुरात्रेयः।
यावन्तो हि लोके (मूर्तिमन्तो) भावविशेषास्तावन्तः पुरुषे,
यावन्तः पुरुषे तावन्तो लोके।

च.शा. 5.3

लोकगत भाव	पुरुषगत भाव	लोकगत भाव	पुरुषगत भाव
पृथिवी	मृति	आप्	क्लेद
तेजस्	अभिसन्ताप	वायु	प्राण
विषय	सुपिर	द्रह्म	अन्तरात्मा
ब्रह्मी विभूति	अन्तरात्मा	ब्रह्म की	प्रजापति
आत्मा की विभूति	सत्त्व	विभूति	

पुरुषविचयशारीराध्याय

415

लोकगत भाव	पुरुषगत भाव	लोकगत भाव	पुरुषगत भाव
इन्द्र	अहंकार	आदित्य	आदान
रुद्र	क्रोध	सोम	प्रसाद
वसु	सुख	अश्विनी	कान्ति
		कुमार	
मरुत्	उत्साह	विश्वेदेव	सर्व इन्द्रिय और सर्व इन्द्रियार्थ
तमस्	योह	ज्योति	ज्ञान
सर्गादि	गर्भाधान	कृतयुग	बाल्यावस्था
त्रेतायुग	यात्रन	द्वापर युग	वृद्धावस्था
कलियुग	आंतुरेवस्था	युगान्तर	मृत्यु

लोक या पुरुष की 5 दशायें

(Five conditions related to loka and purusha)

1. हेतु (उत्पत्ति का कारण)
2. उत्पत्ति (जन्म)
3. वृद्धि (आयायन)
4. उपलब्ध (दुःखागम)
5. वियोग (षड्धातुविभाग)

प्रवृत्ति के 8 कारण (Eight causes for pravrtti)

1. अहंकार
2. संग
3. संशय
4. अभिसम्प्लब
5. अध्यवपत
6. विप्रत्यय
7. अविशेष
8. अनुपाय

मोक्ष का लक्षण (Features of moksha)

- निवृत्तिरपवर्गः; तत् परं प्रशान्तं तत्तदक्षरं तद् ब्रह्म स मोक्षः॥
च.शा. 5.11

सांसारिक विषयों से बुद्धिपूर्वक निवृत्ति ही अपवर्ग (मोक्ष) है। वह श्रेष्ठ है, अत्यन्त शान्त है, वह अक्षर है, वह ब्रह्म है, वही मोक्ष है।

मोक्ष के पर्याय (Synonyms of moksha)

- विपापं विरजः शान्तं परमक्षरमव्ययम्।
अमृतं ब्रह्म निर्वाणं पर्यायैः शान्तिरुच्यते ॥ च.शा. 5.23
- | | | | |
|-----------|----------|---------|----------|
| - विपाप | - विरजस् | - शान्त | - पर |
| - अक्षर | - अव्यय | - अमृत | - ब्रह्म |
| - निर्वाण | - शान्ति | | |

• • •

6. शरीरविचयशारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-34

शारीर ज्ञान का महत्त्व

(Importance of knowledge of sharira)

- शरीरविचयः शरीरोपकारार्थमिष्यते । ज्ञात्वा हि शरीरतत्त्वं शरीरोपकारकरेषु भावेषु ज्ञानमुत्पद्यते । तस्माच्छरीरविचयं प्रशान्तसन्ति कुशलाः॥
च.शा. 6.3

शरीर का विचय शरीर के उपकार के लिए परम उपयोगी होता है। इन शरीर तत्त्वों को सम्यक् प्रकार से जानकर शरीर के उपकार करने वाले भावों का ज्ञान उत्पन्न होता है। इसलिए शरीरविचय नामक विषय की कुशल वैद्यगण प्रशंसा करते हैं।

शरीर की व्याख्या (Definition of sharira)

- तत्र शरीरं नाम चेतनाधिष्ठानभूतं पञ्चमहाभूतविकार-समुदायात्मकं समयोगवाहि।
च.शा. 6.4

चरक संहिता पूर्वार्ध

शरीर वह जिसमें चेतना का अधिष्ठान हो, जो पञ्चमहाभूतों के विकार (रसादि) का समुदाय हो और जो समयोगवाही हो।

शरीर वृद्धिकर भाव

(Factors responsible for increasing the sharira) - 4

1. कालयोग
2. स्वभावसंसिद्धि
3. आहार सौष्ठव
4. अविघात

बलवृद्धिकर भाव

(Factors responsible for increasing the bala) - 13

- बलवृद्धिकरास्त्वमें भावा भवन्ति। तद्यथा-बलवत्पुरुषे देशो जन्म बलवत्पुरुषे काले च, सुखश्च कालयोगः, बीजक्षेत्र-गुणसंपच्च, आहारसंपच्च, शरीरसंपच्च, सात्त्वसंपच्च, सत्त्व-संपच्च, स्वभावसंसिद्धश्च, यौवनं च, कर्म च, संहर्षश्चेति॥

च.शा. 6.13

बलवान् पुरुष के देश में जन्म	बलवान् पुरुष के घर में जन्म	बलवान् काल में जन्म	सुखकारक काल का समयोग	बीज एवं क्षेत्र का गुण युक्त होना	आहार सम्पत् होना
------------------------------	-----------------------------	---------------------	----------------------	-----------------------------------	------------------

शरीरविचयशारीराध्याय

शरीर सम्पत् होना	सात्त्व सम्पत् होना	सत्त्व सम्पत् होना	स्वभाव-संसिद्धि होना	यौवन	कर्म
संहर्ष					

आहार परिणामकर भाव

(Ahara parinamakara bhavas) - 6

- आहारपरिणामकरास्त्वमें भावा भवन्ति। तद्यथा- ऊप्पा, वायुः, क्लेदः, स्नेहः, कालः, समयोगश्चेति॥

च.शा. 6.14

- ऊप्पा	- वायु	- क्लेद	- स्नेह
- काल	- समयोग		

शरीर ज्ञान का महत्त्व

(Importance of anatomical knowledge)

- शरीरं सर्वथा सर्वं सर्वदा वेद यो भिषक्। आयुर्वेदं स कात्स्येन वेद लोकसुखप्रदम्॥

च.शा. 6.19

सर्व प्रकार से सम्पूर्ण शरीर को जो भिषक् जानता रहता है, वही वैद्य लोक को सुख देने वाले आयुर्वेद को पूर्णतः जान सकता है।

गर्भ में सर्वप्रथम उत्पन्न होनेवाला अंग विशेष (च.शा. 6.21)
 (Opinions regarding origin of first organ
 in the fetus)

आचार्य	सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला अंग
कुमारशिरा भरद्वाज	शिर
बाह्लीक भिषक् कांकायन	हृदय
भद्रकाष्ठ	नाभि
भद्रशौनक	पकवाशय एवं गुद
बड़िश	हस्तपाद
विदेहधिपति जनक	ज्ञानेन्द्रिय
मारीचि कशयप	अचिन्त्य विषय होने से इस पर विचार करना व्यर्थ
धन्वन्तरि	सर्वांग

गर्भिणी का आहार रस (Ahara rasa of garbhini)

गर्भिणी का आहार रस 3 भागों में विभक्त होता है। यथा-

1. स्वशरीर पुष्टि के लिए
2. स्तन्य की पुष्टि के लिए
3. गर्भवृद्धि के लिए

गर्भ निष्क्रमण (Cause for parturition)

- स चोपस्थितकाले जन्मनि प्रसूतिमासूतयोगात् परिवृत्त्यावाक्षिरा निष्क्रामत्यपत्यपथेन, एषा प्रकृतिः, विकृतिः पुनरतोऽन्यथा।

च.शा. 6.24

आयु का प्रमाण (Measure of ayus)

- वर्षशतं खल्वायुषः प्रमाणमस्मिन् काले॥

च.शा. 6.29

• • •

7. शरीरसंख्याशारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-20

त्वचा के स्तर (Layers of twacha - skin)

- शरीरे पट् त्वचः; तद्यथा- उद्कधरा त्वग्बाह्या, द्वितीया त्वसृग्धरा, तृतीया सिध्मकिलाससंभवाधिष्ठाना, चतुर्थी ददूकुष्ट-संभवाधिष्ठाना, पञ्चमी त्वलजीविद्रधिसंभवाधिष्ठाना, पष्ठी तु यस्यां छिनायां ताप्यत्यन्ध इव च तमः प्रविशति यां चाप्यधिष्ठायारूपं जायन्ते पर्वसु कृष्णरक्तानि स्थूलमूलानि दुष्कित्यतमानि च; इति पट् त्वचः। च.शा. 7.4

1. उद्कधरा	2. असृग्धरा
3. सिध्मकिलाससंभवा	4. ददूकुष्टसंभवा
5. अलजीविद्रधिसंभवा	6. अरूपं अधिष्ठान

शरीरसंख्याशारीराध्याय

470

शरीर का पठंगत्व (Six parts of the body)

- तत्रायं शरीरस्यांगविभागः; तद्यथा-द्वौ बाहू, द्वे सक्षिणी, शिरोग्रीवम्, अन्तराधिः, इति पठंगमंगम्। च.शा. 7.5
 - दो बाहु (two upper extremities)
 - दो सक्षिणी अर्थात् पैर (two lower extremities)
 - शिर एवं ग्रीवा (head and neck) तथा
 - अन्तराधि (मध्य शरीर) (trunk)
- अस्थि (asthi - bones) (च.शा. 7.6)

कुल संख्या- 360

- शाखा में- 128
- मध्य शरीर में- 140
- शिर एवं ग्रीवा में- 92

इन्द्रिय (Indriyas) (च.शा. 7.7)

इन्द्रिय	इन्द्रिय अधिष्ठान	इन्द्रिय बुद्धि
श्रोत्र	कर्ण	श्रोत्र
स्पर्शन	त्वक्	स्पर्शन
चक्षु	नेत्र	दर्शन
रसना	जिहा	रसन
ग्राण	नासिका	ग्राण

चरक संहिता पूर्वाधि

हृदय (Hrdaya)

- हृदयं चेतनाधिष्ठानमेकम् ॥
दश प्राणायतन (Ten pranayatanas) च.शा. 7.8
- दश प्राणायतनानि; तद्यथा-मूर्धा, कण्ठः, हृदयं, नाभिः, गुदं, बस्तिः, ओजः, शुक्रं, शोणितं, मांसमिति। तेषु षट् पूर्वाणि मर्मसंख्यातानि ॥
च.शा. 7.9

चरक संहिता में दो स्थलों पर दश प्राणायतनों का उल्लेख किया गया है। यथा -

च.सू. 29.3	च.शा. 7.9
शंख (2)	×
हृदय	हृदय
शिर	मूर्धा
बस्ति	बस्ति
कण्ठ	कण्ठ
रक्त	शोणित
शुक्र	शुक्र
ओज	ओज
गुद	गुद

शरीरसंख्याशारीराध्याय

च.सू. 29.3	च.शा. 7.9
×	नाभि
×	मांस
×	×
×	×
×	×
×	×
×	×
×	×

पञ्चदश कोष्ठांग

(Kosthangas - hollow organs) (च.शा. 7.10)

नाभि	हृदय	क्लोम	यकृत्	प्लीहा
वृक्क (2)	बस्ति	पुरीषधार	आमाशय	पक्वाशय
उत्तरगुद	अधरगुद	क्षुद्रान्त्र	स्थूलान्त्र	वपावहन

प्रत्यंग संख्या (Number of pratyangas - sub-parts)
• षट्पञ्चाशत् प्रत्यंगानि षट्स्वर्गेषूपनिबद्धानि । च.शा. 7.11

- 56 प्रत्यंग
महान् छिद्र (Apertures of the body)
• नव महन्ति छिद्राणि-सप्त शिरसि, द्वे चाधः ॥ च.शा. 7.12

चरक संहिता पूर्वाध्य

- शिरः प्रदेश में- 7 [- नेत्र (2)-नासा (2)-कर्ण (2)-मुख]
- अधो प्रदेश में- 2 (- गुद-मूत्रमाण)

जरीरस्थ भावों की संख्या

(Number of various bodily factors) (च.शा. 7.14)

जरीरस्थ भाव	संख्या	जरीरस्थ भाव	संख्या	जरीरस्थ भाव	संख्या
स्नानु	900	सिरा	700	धमनी	200
पंसी	400	मर्म	107	सम्भि	200
सिरा एवं धमनीयों के आणु मुद्दाय	29956	कंका-स्पृश्य- लोम	29956		

जरीरस्थ भावों का अङ्गलि प्रमाण

(Volume of bodily liquids) (च.शा. 7.15)

जरीरस्थ भाव	अङ्गलि प्रमाण	जरीरस्थ भाव	अङ्गलि प्रमाण
उद्ध	10 अङ्गलि	रस	9 अङ्गलि
रस	8 अङ्गलि	पुरीष	7 अङ्गलि
क्रक	6 अङ्गलि	दिन	5 अङ्गलि
मूद	4 अङ्गलि	वसा	3 अङ्गलि
मैद	2 अङ्गलि	मश्जा	1 अङ्गलि

जरीरसंख्याशारीराध्याय

जरीरस्थ भाव	अङ्गलि प्रमाण	जरीरस्थ भाव	अङ्गलि प्रमाण
मस्तिष्क	½ अङ्गलि	गुक्र	½ अङ्गलि
इलैप्पिक ओज	½ अङ्गलि		

जरीरस्थ पार्थिवादि भाव

(Bodily parts - as per the mahabutas)

पार्थिव भाव (Parthiva parts)

- तत्र चट्टिशेषतः स्थूलं स्थिरं पूर्तिमदगुलखरकठिनमंगं नखास्थिदन्तमांसचर्मवर्चः केशश्यश्रुतोमपकण्डरादि तत् पार्थिवं गच्छो द्वाणं च।

च.शा. 7.16

आप्य भाव (Apya parts)

- यद्ववसरमन्दस्निध्यमूर्द्यिच्छिलं मूत्रस्वेदादि तदाप्यं रसो रसनं च।

रसनधिरवसाकफपित्त-

च.शा. 7.16

तैजस भाव (Tajasa parts)

- यत् पित्तमूष्पा च यो या च भाः शरीरे तत् सर्वमानेयं स्फूर्तं दण्डनं च।

च.शा. 7.16

वायवीय भाव (Vayaviya parts)

- यदुच्छ्वासप्रश्वासोन्नेयनिमेयाकुञ्जनप्रसारणगमनप्रेरणाधारणादि तद्वायवीय स्फृणः स्फृणं च।

च.शा. 7.16

आन्तरीक्ष भाव (Antariksha parts)

- यद्विविक्तं यदुच्यते महान्ति चाणूनि स्रोतांसि तदान्तरीक्षं शब्दः
श्रोत्रं च।

च.शा. 7.16

शरीरस्थ अवयवों की असंख्यता

(Innumerability of bodily parts)

- शरीरावयवास्तु परमाणुभेदेनापरिसंख्येया भवन्ति,
अतिवहुत्वादतिसांक्षयादतीन्द्रियत्वाच्च। तेषां संयोगविभागे
परमाणूनां कारणं वायुः कर्मस्वभावश्च।।

च.शा. 7.17

• • •

8. जातिसूत्रीयशारीराध्याय

कुल श्लोक संख्या-69

गर्भाधान पूर्व आवश्यक कर्तव्य
(Preparatory measures for conception)

- स्नेहन एवं स्वेदन (स्त्री एवं पुरुष का)
- वमन एवं विरेचन (स्त्री एवं पुरुष का)
- आस्थापन एवं अनुवासन वस्ति (स्त्री एवं पुरुष का)
- पुरुष के लिए- मधुर औषध सिद्ध घृत एवं क्षीर
- स्त्री के लिए- तैल एवं माय

मैथुन के लिए अयोग्य स्थितियाँ
(Improper posture for intercourse)

- न्युञ्ज स्थिति- वात प्रकोपक
- पाइर्वगत स्थिति- कफ प्रकोपक

2020-7-13 20

- दक्षिण पाश्व स्थिति- कफ प्रकोपक
- वाम पाश्व स्थिति- पित्त प्रकोपक

गर्भाधान के योग्य मैथुन स्थिति
(Appropriate sexual posture for conception)

- तस्मादुन्नाना वीजं गृहीयात्। च.शा. 8.6
- पुत्रेष्टि यज्ञ (Putreshhti yajnya) (च.शा. 8.6)
- इच्छित सन्तान प्राप्ति के लिए

गर्भ का वर्ण (च.शा. 8.15)
(Complexion of garbha - embryo)

वर्ण	महाभूत आधिक्य
अवदात (गौर)	तेज + जल + आकाश
कृष्ण	तेज + वायु + पृथिवी
श्याम	सम सर्व धातु

पुंसवन कर्म (Pumsavana karma)

काल -

- तस्मादापनगर्भा स्त्रियमभिसमीक्ष्य प्राग्वक्तीभावादगर्भस्य
पुंसवनमस्यै दद्यात्। च.शा. 8.19

विधि -

- गोशाला में उत्पन्न न्यग्रोध के 2 शुंग (पूर्व एवं उत्तर दिशा की शाखाओं से) को 2 धान्य माप एवं 2 गौर सर्पप को दधि में मथकर पुष्य नक्षत्र में पान कराना चाहिए।
- जीवक, ऋषभक, अपामार्ग, सहचर के कल्क को दूध में डालकर संस्कार कर पुष्य नक्षत्र के दिन गर्भिणी को पिलायें।
- कुड्यकीट या मत्स्यक को 1 अङ्गलि जल में डालकर पुष्य नक्षत्र के दिन गर्भिणी को पिलायें। आदि।

गर्भस्थापन द्रव्य (Drugs for garbha-sthapana)
• ऐन्द्री ब्राह्मी शतवीर्या सहस्रवीर्याऽमोघाऽव्यथा शिवाऽरिष्टा वाट्यपुष्पी विष्वक्सेनकाना चेत्यासामोषधीना शिरसा दक्षिणेन वा पाणिना धारणम्। च.शा. 8.20

- ऐन्द्री	- ब्राह्मी	- शतवीर्या	- सहस्रवीर्या
- अमोघा	- अव्यथा	- शिवा	- अरिष्टा
- वाट्यपुष्पी	- विष्वक्सेनकाना		

उपाविष्टक (Upavishtaka)

- यस्या: पुनरुष्णातीक्ष्णोपयोगादगर्भिण्या महति संजातसरे गर्भे पुष्पदर्शनं स्यादन्यो वा योनिश्वावस्तस्या गर्भो वृद्धिं न प्राप्नोति निःस्फुतवात्; स कालमवतिष्ठतेऽतिमात्रं, तमुपविष्टक-मित्याचक्षते केचित्। च.शा. 8.26

गर्भिणी में पुष्पदर्शन (रक्तम्राव) से गर्भ की वृद्धि रुक जाना-उपचिक है।

नागोदर (Nagodara)

- उपवासव्रतकर्मपरायाः पुनः कदाहारायाः स्नेहद्वेषिण्या वातप्रकोपणोक्तान्यासेवमानाया गर्भो वृद्धिं न प्राप्नोति परिशुष्कल्वात्; स चापि कालमवतिष्ठते ऽतिमात्रम्, अस्पन्दनश्च भवति, तं तु नागोदरमित्याचक्षते ॥

च.शा. 8.26

वात प्रकोपक आहार एवं विहार से गर्भ वृद्धि को प्राप्त न होकर परिशुष्क हो जाता है तथा स्पन्दन नहीं करता है।

मासानुसार गर्भिणी उपचार

(Month wise treatment schedule for pregnant women)

प्रथम मास (First month)

- प्रथमे मासे शक्तिता चेदगर्भमापना क्षीरमनुपस्कृतं मात्रावच्छीतं काले काले पिबेत्, सात्प्यमेव च भोजनं सायं प्रातश्च भुजीति।

च.शा. 8.32

द्वितीय मास (Second month)

- द्वितीये मासे क्षीरमेव च मधुरौषधसिद्धम्।

च.शा. 8.32

तृतीय मास (Third month)

- तृतीये मासे क्षीरं मधुसर्पिर्भ्यामुपसंसृज्य।

च.शा. 8.32

चतुर्थ मास (Fourth month)

- चतुर्थे मासे क्षीरनवनीतपक्षमात्रमशनीयात्।

च.शा. 8.32

पञ्चम मास (Fifth month)

- पञ्चमे मासे क्षीरसर्पिः।

च.शा. 8.32

षष्ठ मास एवं सप्तम मास (Sixth & Seventh month)

- षष्ठे मासे क्षीरसर्पिर्मधुरौषधसिद्धं; तदेव सप्तमे मासे।

च.शा. 8.32

अष्टम मास (Eighth month)

- अष्टमे तु मासे क्षीरयवांगु सर्पिष्वर्तीं काले काले पिबेत्।

च.शा. 8.32

नवम मास (Ninth month)

- नवमे तु खल्वेनां मासे मधुरौषधसिद्धेन तैलेनानुवासयेत्। अतश्चौवास्यास्तैलात् पिचुं योनौ प्रणयेद्गर्भस्थानमार्गस्तेनार्थम्।

च.शा. 8.32

2020-7-13 20:55

मास	उपचार
प्रथम मास	क्षीर
द्वितीय मास	मधुर औषध सिद्ध क्षीर
तृतीय मास	मधुर एवं सर्पि मिश्रित क्षीर
चतुर्थ मास	क्षीर एवं नवनीत (अक्ष मात्रा में)
पञ्चम मास	क्षीर एवं घृत
षष्ठ मास	मधुर औषध सिद्ध क्षीर सर्पि
सप्तम मास	मधुर औषध सिद्ध क्षीर सर्पि
अष्टम मास	क्षीर एवं यवागृ
नवम मास	मधुर औषध सिद्ध तैल से अनुवासन बस्ति एवं योनि पिचु

प्रजननकाल के लक्षण (Features of prajanana kala)

- तस्यास्तु खल्त्वमानि लिंगानि प्रजननकालमभितो भवन्ति; तद्यथा-क्लमो गात्राणां, ग्लानिराननस्य, अक्षणोः शैथिल्यं, विमुक्तव्यनत्वमिव वक्षसः, कुक्षेरवसंसनम्, अधोगुरुत्वं, वंक्षणबस्तिकटीकुक्षिपाश्वर्वपृष्ठनिस्तोदः, योने: प्रसवणम्, अनन्नाभिलाषश्चेति; ततोऽनन्तरमावीनां प्रादुर्भावः, प्रसेकश्च गर्भोदकस्य ॥

च.शा. 8.36

जातिसूत्रीयशारीराध्याय

- | | | |
|------------------------|-------------------------|-----------------|
| - गात्र क्लम | - आनन ग्लानि | - अक्षि शैथिल्य |
| - वक्ष व्यन्धन विमुक्त | - कुक्षि का अवसंसन | |
| - अधोभाग में गौरवता | - वंक्षणादि में निस्तोद | |
| - योनि से स्राव | - अनन्नाभिलाषा | |
| - आवि प्रादुर्भाव | - गर्भोदक स्राव | |

नाभिनाल छेदन विधि (Clamping of umbilical cord)
(च.शा. 8.45)

- छेदन स्थान- आठ अंगुल की दूरी पर छेदन
- नाभि पाक चिकित्सा- लोध्रादि (लोध्रमधुकप्रियंगुसुरदारु-हरिद्राकल्क) सिद्ध तैल द्वारा सिश्न तथा लोध्रादि चूर्ण से अवचूर्णन
- असम्यक् नाभिनाल कल्पन से उत्पन्न दोष-

1. उत्तुण्डित
2. पिण्डलिका
3. विनाभिका
4. विजृभिका

जातकर्म (Jata-karma)

- मधुसर्पीषि मन्त्रोपमन्त्रिते यथाम्नायं प्रथमं प्राशितुं दद्यात्। स्तनमत ऊर्ध्वमेतेनैव विधिना दक्षिणं पातुं पुरस्तात् प्रयच्छेत्। अथातः शीर्षतः स्थापयेदुदकुम्भं मन्त्रोपमन्त्रितम्॥ च.शा. 8.46

2020-7-13 20:57



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

नामकरण संस्कार (Naming ceremony)

- काल- प्रसव के बाद 10वें दिन
- विधि- दो नाम रखना-1. नाक्षत्रिक एवं 2. आभिप्रायिक

स्तन सम्पत् के लक्षण (Features of stana sampat)

- तत्रेय स्तनसंपत्-नात्यूर्ध्वाँ नातिलम्बावनतिकृशावनतिपीनौ युक्तपिष्ठलकौ सुखप्रपानौ चेति (स्तनसंपत्) ॥ च.शा. 8.53
- न अति ऊर्ध्व - न अतिलम्ब - न अतिकृश - न अतिपीन - पिष्ठलक से युक्त - सुख प्रपान

स्तन्य सम्पत् के लक्षण (Features of stanya sampat)

- स्तन्यसंपत्तु प्रकृतिवर्णगन्धरसस्पर्शम्, उदपात्रे च दुह्यमानमुदकं व्येति प्रकृतिभूतत्वात्; तत् पुष्टिकरमारोग्यकरं चेति (स्तन्यसंपत्) ॥ च.शा. 8.54
 - प्राकृतिक वर्ण, गन्ध, रस एवं स्पर्श वाला
 - जलपूर्ण पात्र में मिलाने पर एकवर्ण होना

क्रीड़नक (Kridanaka - toys for children)

- क्रीड़नकानि खलु कुमारस्य विचित्राणि घोषवन्त्यभिरामाणि चागुरूणि चातीक्षणाग्राणि चानास्यप्रवेशीनि चाप्राणहराणि चावित्रासनानि स्युः ॥ च.शा. 8.63

- विचित्र - घोषयुक्त - अगुरु (हलके हों) - अतीक्षण अग्र युक्त - मुख में न प्रवेश करने वाले - प्राणहर न हों - वित्रासन न करने वाले हों।

शारीरस्थान की व्याख्या (Definition of Sharira sthana)

- शरीरं चिन्त्यते सर्व दैवमानुषसंपदा । च.शा. 8.69
सर्वभावैर्यतस्तस्माच्छारीरं स्थानमुच्यते ॥
- सभी उचित उपायों द्वारा दैवीसम्पत् (आत्मा आदि) तथा मानुषसम्पत् (शरीर सम्बन्धी भाव) से प्राणिमात्र के शरीर की चिन्ता (विचार) करने के कारण ही इस स्थान का नाम शारीर रखा गया है।

• • •